रोकथाम

आम के प्रमुख कीटों का प्रबंधन

गजेन्द्र सिंह* और **अर्चना अनोखे****

भारत, फलों और सब्जियों के उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है। आम, हमारे देश में सबसे महत्वपूर्ण फल है। यह अपनी सुगंध और बेहतर स्वाद के लिए विख्यात है। आम को भारत में ऊष्ण और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। लोकप्रियता के साथ-साथ इसमें बहुत से पोषक तत्व होते हैं जो मनुष्य की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं। इस फसल को बहुत से कीट हानि पहुंचाते हैं जिससे किसानों को आर्थिक हानि होती है। इसकी बेहतर और गुणवत्तायुक्त उपज प्राप्त करने के लिए इसमें लगने वाले कीटों का उचित समय पर नियंत्रण करना बेहद आवश्यक हो जाता है।

आम का उत्पादन देश में लगभग सभी स्थानों पर होता है। इनमें उत्तर प्रदेश का प्रथम स्थान है। आज के समय में अधिक कीटनाशी का प्रयोग हो रहा है। इससे उत्पादन में लागत तो बढी है लेकिन हमारे मित्र कीट भी मर रहे हैं। इसका एक नुकसान भी है कि फलों में कीटनाशकों का अवशेष रह जाता है। आई.पी.एम पद्धति का चयन कर कम लागत में कीटों का प्रबंधन कर सकते हैं।

प्रमुख कीट और प्रबंधन

मधुआ कीट

यह कीट आम की नई पत्तियों, टहनियों और पुष्पगुच्छों से रस चूसकर हानि पहुंचाता है। इस कीट के निम्फ पत्तियों से रस चूसते हैं। इससे इसके पुष्प मुरझाकर झड़ जाते हैं।

मधुआ कीट से प्रभावित पत्ती

प्रबंधन

- ब्यूवेरिया बेसियाना फफूंद का 2 किलो/एकड़ छिड़काव करें।
- नीम तेल 300 पीपीएम या 2 मि.ली./लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- एमिडाक्लोरोप्रिड 0.3 मि.ली./लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मधुआ कीट से प्रभावित टहनी

फल मक्खी

इस कीट की मादा फलों की परिपक्व अवस्था में फलों के अंदर अंडे देती है। अंडे से मैगट निकलते हैं। ये गूदे को खाकर नुकसान पहुंचाते हैं। तत्पश्चात्, फल जमीन पर गिर जाते हैं जो खाने लायक नहीं रहते हैं।

फल मक्खी से प्रभावित फल

प्रबंधन

- इसकी रोकथाम के लिए फेरोमोन का घोल मिथाइल यूजिनॉल 0.8 प्रतिशत एवं मेलाथियान 0.08 प्रतिशत के साथ बनाकर डिब्बे में भरकर पेड़ों पर टांग देने से नर मक्खियाँ आकर्षित होकर मेलाथियान द्वारा नष्ट कर दी जाती हैं। एक एकड़ बाग के लिए चार ट्रैप लगाने चाहिए।

फेरोमोन ट्रैप

दहिया कीट

इस कीट के निम्फ और वयस्क बौर एवं फलों से रस चूसते हैं। तीव्र प्रकोप की दशा में प्ररोह और बौर सूख जाते हैं तथा प्रारंभिक अवस्था में फल भी सूख जाते हैं।

दहिया कीट से प्रभावित टहनी, फल और पत्ती

प्रबंधन

- इसकी रोकथाम के लिए गर्मियों में गहरी जुताई करनी चाहिए और दिसंबर के अंतिम सप्ताह में तने के चारों ओर 25 सेंटीमीटर चौड़ी 400 गेज की पॉलीथीन की पट्टी जमीन से 1 मीटर की ऊंचाई पर बांध देनी चाहिए।
- साथ ही निचले सिरे पर ग्रीस लगा देनी चाहिए या मोनोक्रोटोफॉस 1.5 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

*शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग, स.व.प.कृ.प्रौ. वि. मेरठ-250110; **सरसों अनुसंधान केंद्र भरतपुर, राजस्थान

तनाछेदक कीट

इस कीट की सुंडी पौधों के तने के अंदर ही अंदर घुसकर खाती रहती है और अनियमित सुरंग बनती रहती है। इससे पौधा आंशिक या पूर्ण रूप से सूख जाता है। यह कीट तनों पर बुने हुए जालों में फंसे उनके मल की मौजूदगी से पहचाना जा सकता है।

तनाछेदक कीट से प्रभावित तना

तनाछेदक का वयस्क कीट

प्रबंधन

- प्रभावित पौधों के छेदों को किसी पतले तार से साफ करें उनमें डाई क्लोरोबास की 2-3 मि.ली. मात्रा पानी में घोलकर छेद में डालकर गीली मिट्टी से बन्द कर देते हैं।
- कार्बोफ्यूरॉन 3जी 5 ग्राम / छेद डालकर मिट्टी से बन्द कर देते हैं।

गुठली का घुन

इस कीट की मादा फलों के अंदर अंडे देती है। इससे ग्रब निकलकर गुठली में प्रवेश करके इसे खाकर नष्ट कर देते हैं और फल गिर जाते हैं। गिरे हुए और प्रकोपित फलों को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए।

गुठली घुन से प्रभावित फल

गॉल मिज वयस्क कीट और प्रभावित पत्तियां

रोकथाम

- कीट के लिए प्रतिरोधी किस्म को रोपना चाहिए।
- समय-समय पर पौधे की कटाई-छंटाई करते रहना चाहिए। रोगी या कीट से प्रकोपित टहनी को काटकर निकाल देना चाहिए।
- गर्मी में गहरी जुताई करें ताकि तेज धूप से मिट्टी में छिपे कीट-व्याधि नष्ट हो जाएं।
- खाद एवं उर्वरकों का संतुलित मात्रा में प्रयोग करना चाहिए।
- नियमित अंतराल पर सिंचाई करते रहें तथा जलभराव होने पर अतिरिक्त पानी के लिए जल निकास की व्यवस्था करें।
- कीटों का प्रकोप होने पर क्रांतिक स्तर पर उचित एवं जैविक विधि से नियंत्रण करना चाहिए।
- कभी भी कीटनाशकों का प्रयोग फूल खुलते समय नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे फल का उचित विकास नहीं हो पाता। साथ ही परागण कीट भी मर जाते हैं इससे परागण न होने से उत्पादन भी घट जाता है।
- फसल की उचित समय पर तुड़ाई कर लेनी चाहिए।

गॉल मिज

इस कीट के लार्वा, बौर के डंठल पत्तियों, फूलों और छोटे-छोटे फलों के अंदर रहकर हानि पहुंचाते हैं। इनके प्रभाव से फूल एवं फल नहीं लगते हैं और फल गिर जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए गर्मियों में गहरी जुताई करनी चाहिए तथा फॉस्मेडॉन 0.05 प्रतिशत (203 ग्राम/एकड़) का छिड़काव बौर की स्थिति में करनी चाहिए।

दीमक से प्रभावित तना

दीमक

यह मिट्टी के अंदर जीवनयापन करने वाला कीट है। यह जड़ को खाता है। इसकी रोकथाम के लिए 10 ग्राम प्रति लीटर ब्यूवेरिया बेसियाना के घोल का छिड़काव करें या तने के ऊपर मोनोक्रोटोफॉस 1 मि.ली./लीटर से ड्रेंच करें।

फलछेदक कीट

इस कीट के लार्वा जब फल मटर के आकार के होते हैं तब से ये परिपक्वता तक फल में घुसकर गूदे तथा बाद में बीज को खाकर नुकसान पहुंचाते हैं। इससे फल शुरुआती अवस्था में गिर जाते हैं।

फलछेदक से प्रकोपित फल

इसके नियंत्रण के लिए गिरे हुए प्रकोपित फलों को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए। इसका अधिक प्रकोप होने पर नीम ऑयल 3 मि.ली./लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए या क्लोरात्रिनिलीप्रोले 18.5 ई. सी 0.3 मि.ली./लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव करना चाहिए।